International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 07-08-2023, Accepted: 22-08-2023, Published: 09-09-2023
Volume 9, Issue 5, 2023, Page No. 12-13

भारत में वाणिज्य शिक्षा का उद्भव प्रकृति एवं विकासः एक अध्ययन

सरिता
स्नातकोत्तर, वाणिज्य विभाग, यू.जी.सी नेट, इन्दिरा गांधी विश्वविद्यालय, मीरपुर, रेवाड़ी, हरियाणा, भारत

सारांश
वाणिज्य एवं अंग्रेजी के 'बिजनेस' शब्द का उद्भव 'बिजि' अर्थात् 'व्यस्त' शब्द से हुआ है। मानव सभ्यता के उदय से भी बहुत पहले मनुष्य के जीवन में वाणिज्य का प्रवेश हो चुका था। मुद्रा के प्रचलन, व्यापार के बढ़ते हुए क्षेत्र तथा मनुष्य की विविध आवश्यकताओं ने मनुष्य को वाणिज्य की ओर निकट ला खड़ा किया है। अतः राष्ट्रों में वाणिज्य शिक्षा की अत्यधिक आवश्यकता महसूस की गई है। वाणिज्य शिक्षा के द्वारा ही विकसित राष्ट्र अपने विकास की और अधिक सुदृढ़ बनाकर आगे बढ़ा सकते हैं। इसी की सहायता से विकासशील अपने विकास को आगे बढ़ा सकते हैं। वाणिज्य शिक्षा मुख्य रूप से आर्थिक शिक्षा का वह कार्यक्रम है जो धन उपलब्ध, संचय और उसे व्यय करने से संबंधित है। वाणिज्य शिक्षा, शिक्षा प्रक्रिया का वह पक्ष है जो व्यापारिक व्यवसायों की व्यवसायिक तैयारी से संबंध रखता है या वाणिज्य से संबंधित धन्धो हेतु तैयार करता है। वाणिज्य की शिक्षा, वाणिज्य की स्थापना, संचालन, संगठन तथा ऐसे ही अन्य अनेक महत्वपूर्ण पहलुओं का ज्ञान प्रदान करती हैं। वाणिज्य शिक्षा एक व्यक्ति में उन मानवीय तथा व्यापारिक गुणों का सहजता के साथ विकास करती है जो एक सफल व्यापारी में होने चाहिए। वाणिज्य शिक्षा से ही कोई व्यक्ति कुशल व्यापारी बन पाता है।

मूल शब्दः सभ्यता, वाणिज्य, कार्यक्रम, विकसित राष्ट्र, आर्थिक शिक्षा, व्यावसायिक

वाणिज्य शिक्षा की आवश्यकता

वर्तमान समय में किसी भी राष्ट्र की प्रगति के लिए वाणिज्य शिक्षा अत्यधिक आवश्यक है। इस ज्ञान की सहायता से व्यापार और उद्योग स्थापना, संचालन आदि में सफलता प्राप्त होती है। संक्षेप में यदि हम क्रमानुसार उल्लेख करें तो कह सकते हैं कि वाणिज्य शिक्षा की निम्नलिखित कारणों से आवश्यकता है।

आर्थिक एवं भौतिक उन्नति हेतुः राष्ट्र, समाज, व्यक्ति स्वयं की आर्थिक एवं भौतिक उन्नति के लिए वाणिज्य शिक्षा अत्यंत ही महत्वपूर्ण तथा उपयोगी है। इससे नए–नए उद्योग स्थापित करने में सहायता मिलती है। इसकी सहायता से मनुष्य व्यापार करके धन कमाना सीखता है। इससे राष्ट्र तथा समाज की आर्थिक उन्नति होती है।

प्राकृतिक सम्पदायों का शोषणः प्रकृति ने हमें विविध तथा प्रचुर सम्पदायें प्रदान की है। इन प्रकृति–प्रदत्त विविध सम्पदायों की खोजकर उनका उपयोगी दोहन एवं शोषण करने पर ही आर्थिक एवं नैतिक उन्नति निर्भर करती हैं। वाणिज्य शिक्षा हमें बताती है कि प्रकृति ने हमें कौन–कौन प्राकृतिक सम्पदायें दी हैं तथा उनका किस प्रकार दोहन तथा शोषण किया जा सकता है। वाणिज्य शिक्षा के ज्ञान से प्राकृतिक सम्पदायों का पता लगाकर नये–नये उद्योग स्थापित किए जा सकते हैं। इससे आर्थिक विकास संभव होता है।

श्रम व्यवस्था तथा कल्याणः वाणिज्य केवल आर्थिक तथा भौतिक उन्नति का ही विज्ञान नहीं है, इसके अपने कुछ विशिष्ट मानवीय मूल्य भी हैं। इन मूल्यों का बहुत कुछ मात्रा में वाणिज्य में श्रमिकों पर उद्योग किया जाता है। वाणिज्य शिक्षा हमें सिखाती है कि किस प्रकार श्रमिकों की व्यवस्था की जाए, किस प्रकार उनसे अधिकाधिक मात्रा में काम लिया जाए तथा इसके साथ ही हम किस प्रकार श्रमिकों का कल्याण कर सकें। श्रम–संबंधों को कैसे मधुर बनाया जाए, जिससे श्रम–समस्याएँ कम से कम हो, यह हमें वाणिज्य शिक्षा से ही ज्ञात होता है।

देशी एवं विदेशी व्यापार का ज्ञानः वाणिज्य शिक्षा हमें देशी तथा विदेशी व्यापार का ज्ञान प्रदान करती हैं। वाणिज्य में हम देशी तथा तटीय व्यापार का अध्ययन करते हैं कि देश की व्यापारिक स्थिति क्या है? देश किन–किन वस्तुओं का निर्माण करता है, किनका निर्यात तथा आयात करता है? इस प्रकार के ज्ञान से व्यक्ति को अपना व्यापार तथा वाणिज्यिक उपक्रम करने में सुविधा होती है।

अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में सुधारः वाणिज्य द्वारा विशेष तौर से अंतर्राष्ट्रीय व्यापार से अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में सुधार होता है। वाणिज्य शिक्षा हमें ज्ञान कराती है कि किस प्रकार, किन वस्तुओं में तथा किन देशों के साथ व्यापार किया जा सकता है। अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में कुशलता के लिए वाणिज्य शिक्षा परमावश्यक है।

भारत में वाणिज्य शिक्षा का विकासः भारत वर्ष में वाणिज्य शिक्षा का इतिहास बहुत अधिक पुराना नहीं है। भारत में आधुनिक शिक्षा का सूत्रपात कलकत्ता, मद्रास तथा बम्बई के तीन विश्व विद्यालय स्थापित करके सन् 1857 ई० में अंग्रेज शासकों द्वारा किया गया। इस समय अंग्रेजों को भारत में शिक्षा का प्रसार का मुख्य उद्देश्य ऐसे भारतीय लिपिकों का निर्माण करना था जो अंग्रेजी शासन को चला सकें। अतः इन तीनों ही विश्वविद्यालयों में किसी भी प्रकार की व्यावहारिक तथा उपयोगी शिक्षा की व्यवस्था नहीं की गई। अतः उस समय तत्कालीन शिक्षा की कटु आलोचनाएँ हुई, परिणामस्वरूप अंग्रेजी सरकार को कृषि तथा वाणिज्य जैसे उपयोगी तथा व्यावहारिक विषयों के शिक्षण की भी व्यवस्था करनी पड़ी। इसी व्यवस्था के अंतर्गत सबसे पहले सन् 1903 ई० में कलकत्ता के प्रेसीडेन्सी कॉलेज में वाणिज्य–शिक्षा की व्यवस्था प्रयोगात्मक रूप से प्रारम्भ की गई। कलकत्ता की वाणिज्य शिक्षा की सफलता से प्रेरित होकर बम्बई में भी वाणिज्य शिक्षा की व्यवस्था की गई और यहाँ सर सैय्यदन कॉलेज की स्थापना 1914 ई० में हुई थी। अतः यहाँ वाणिज्य की शिक्षा दी जाने लगी। इसके बाद मद्रास विश्वविद्यालय में भी वाणिज्य

विषयों से संबंधित कार्यक्रम प्रारम्भ हुए। कालांतर में वाणिज्य विषय के प्रति भारतीयों में रूचि उत्पन्न हुई और वाणिज्य शिक्षा की मांग बढ़ने लगी। इसी समय भारत में नए–नए विश्वविद्यालय स्थापित हुए। इनमें प्रारंभिक स्थापना से ही वाणिज्य विषयों की शिक्षा की व्यवस्था की गई। धीरे–धीरे वाणिज्य विषयों की शिक्षा के प्रसार में गति आई और स्कूली शिक्षा–स्तर पर भी वाणिज्य विषयों की शिक्षा के प्रसार में गति आई और स्कूली शिक्षा–स्तर पर भी वाणिज्य विषयों के शिक्षण की व्यवस्था की गई। कालांतर में कलकत्ता, बम्बई तथा दिल्ली विश्वविद्यालयों में वाणिज्य विषयों में उच्च स्तरीय पाठ्यक्रमों की भी व्यवस्था की गई और इस प्रकार की शिक्षा के लिए यहाँ राष्ट्रीय स्तर की संस्थाए स्थापित की गई।

उक्त विवेचन से स्पष्ट है कि भारत में वाणिज्य शिक्षा का प्रारंभ 1903 ई० से हुआ, किन्तु अपने जीवन के प्रारंभिक दिनों में आरम्भ में अंग्रेजी शासन होने के कारण भारत में वाणिज्य शिक्षा का यथेष्ट प्रसार न हो सका। स्वतंत्रता के बाद इस दिशा में काफी अच्छी प्रगति हुई है।

निष्कर्ष

आधुनिक युग मे सभी विकसित, विकासशील तथा अविकसित राष्ट्रों में वाणिज्य शिक्षा की नितांत आवश्यकता है। वाणिज्य शिक्षा की सहायता से ही अविकसित राष्ट्र विकासोन्मुखी दिशा में कदम बढ़ा सकते हैं। वाणिज्य शिक्षा की सहायता से समाज और व्यक्ति भी अपनी आर्थिक तथा भौतिक उन्नति कर सकते हैं। किन्तु भारत की जनसंख्या तथा आवश्यकताओं को देखते हुए कहा जा सकता है कि आज भी भारत में वाणिज्य शिक्षा की पर्याप्त व्यवस्था नहीं है। आज आवश्यकता है इस बात की है कि राष्ट्र में ऐसी उच्च एवं राष्ट्रीय स्तर की संस्थाएँ स्थापित की जाए जो देश को योग्य एवं कुशल वाणिज्य प्रशासक एवं संगठनकर्ता प्रदान कर सकें।

संदर्भ सूचीः

1. Agarwala AN (Ed.). Planning for Business Education and Research in India, 1964.
2. Ghosh AB. Commerce Education, 1968.
3. Mead, Margaret. Culture and Commitment: A Study of Generation Gap, New York, Doubleday, 1970.
4. Maston Robert E. Three Stages of Civilization (Workshop Materials Published by Futuremics, Inc, Washington DC, 1970.
5. Singh Dr CD. Graduate Education in Commerce.
6. Tofflor Alvin. “The Psychology of the Future” in Learning From Tomorrow Edited by Alvin Tofflor , New York: Randon House, 1974.